रात्रीक्लास ओमशांति 13.9.67

गांधी जी को भी बापूजी वा भारत का फादर कहते हैं। वर्ल्ड का फादर नहीं कहेंगे। यह दो फादर है। शिवबाबा भी फादर है। तो प्रजापिता ब्रह्मा भी फादर है ना। इनको वर्ल्ड का फादर कहेंगे। नहीं तो फादर एक होता है। यह निराकार भी बापूजी तो साकार भी बापूजी। एक ही बार इनका पार्ट ड्रामा में बजता है। इसलिए ही कहा जाता है बाप–दादा। दादा द्वारा ही बाप से वर्सा मिलता है। यह तो बच्चे जानते हैं कि बेहद का बाप हमको पढ़ाते हैं। कहते हैं जब भगवानोवाच्य तो उनको कृष्णपुरी ही बुद्धि में आता है। वो बेहद का बाप तो हो नहीं सकता है। बेहद का बाप तो निराकार शिवबाबा ही है। ब्रह्मा को कहा जाता है ग्रेट2 ग्रैंड फादर। शिवबाबा को सिर्फ फादर ही कहेंगे। अब ऐसे फादर बच्चों को पढ़ाते हैं। बाप पढ़ाते हैं तभी यह भी पढ़ा सकते हैं। यह तो भाई के रूप में भी आ जाते हैं। मम्मा भी हो जाते हैं ;क्योंकि इन द्वारा ही एडाप्ट करते हैं तो मात–पिता भी हो जाते हैं। वो तो निराकार है। माता कहां से आवेगी? यह माता भी है तो पिता भी है। गायन भी है ना तुम मात–पिता.....शिवबाबा तो फादर है। उनको मात–पिता कैसे कह सकते हैं?कहते हैं कि यह मेरी बन्नी है। मैं इनसे एडाप्ट करता हूं। तो इनको ही मात–पिता कह सकते हैं। शिवबाबा तो सदैव है ही है। एडॉप्टेशन देहधारी की होती है। बाप आकर एडॉप्ट करते हैं और इनमें प्रवेश कर कहते हैं कि तुम हमारे बच्चे हो। बच्चे फिर कहते हैं कि बाबा हम आपके हैं। बाबा ने समझाया है कि शिवबाबा सभी का बाप है। तो जरूर आकर भारत को ही वर्सा दिया होगा। बेहद का बाप आकर मुक्ति और जीवनमुक्ति का वर्सा देते हैं। मुक्ति में तो सभी को जाना ही है। तुम हिसाब–किताब चुक्तू ही करते हो योगबल से। तुम फिर भी पहले2 ही आते हो ;क्योंकि राजाई करनी होती है ना। तुमको डबल इंजन खींचते हैं ना। तुमको पता थोड़े ही पड़ता है कि निराकार बात कहते हैं वा साकार। कब वो बात करते हैं ,कब वो बात करते हैं। यह भी पुरुषार्थ है ना। सूक्ष्मवतन में भी इस बाबा को देखते हैं। यह पास होते हैं। मम्मा–बाबा की गारन्टी है। गाया भी जाता है अम्बा,सरस्वती। नाम इनके बहुत रखे हुए हैं– अम्बा,काली। किसको भी पता नहीं है कि कौन है। बंगाल में काली की कितनी पूजा करते हैं। मगर शकल तो देखो कैसी है। जैसे कि कोई रक्षसणी हो। इतनी तो वो भयानक बनाई है। ऐसे तो कोई है नहीं। और फिर दिखाया भी है तो हिंसक। एक हाथ में तलवार है। कितनी पूजा होती है। बाप समझाते हैं कि ऐसे काल का रूप कोई होता नहीं है। मनुष्यों के ही चित्र हैं। अम्बा के पास भी बहुत जाते हैं। एक मम्मा है। फिर साथ2 में तुम भी हो। चण्डिका देवी का मेला भी लगता है। यहां पर तो देवी कहना भी रांग है। देवी वा श्री अक्षर है ही देवताओं को। श्री लक्ष्मी,श्री देवी,श्री नारायण देवता। यह स्वर्गवासियों के अक्षर नर्कवासियों को दे दिये हैं। यह रांग है। कहते भी हो कि यह पतित दुनियां आसुरी रावण का राज्य है ;परंतु कोई भी समझ नहीं सकते हैं। आजकल के मनुष्यों की एक्टिविटी भी राक्षसों के जैसी है। कैसे2 खून कर चले जाते हैं। यह तो राक्षसों का ही काम है ना। एम.पी. आदि भी कहते रहते हैं कि राक्षस राज्य है। तुम तो अब शिवालय का मालिक बनते हो। शिवालय सतयुग को और वैश्यालय नर्क को कहा जाता है तो तुमको कितना नशा होना चाहिए। हम सारे विश्व को नर्क से स्वर्ग बनाते हैं। हम ब्र.कु.कु. संगम पर हैं। बाकी तो जो भी शूद्र वर्ण वाले पतित हैं वो तो कलियुग में हैं। वो तो पावन तब बन सकें जबकि ब्राह्मण बनें। बाप कितनी अच्छी2 बातें सुनाते हैं। लांग2 बिफोर सतयुग था। उसमें ल.ना. का राज्य था। उन्होंने 84जन्म कैसे लिए वो हम आपको ल.ना. की कहानी सुनाते हैं। यह है रायल कहानी। हम तुमको सत्यनारायण और लक्ष्मी की कथा ऐसी सुनाते हैं कि जो तुम भी ल.ना. बन जाओ। यह संगमयुग है। इसको पुरुषोत्तम युग भी कहा जाता है। तुम स्वर्ग में जाते हैं तो फर्नीचर भी सारा फर्स्टक्लास ही मिलेगा ना। अच्छा, बच्चों से रात की नमस्ते। ओम।